

सहयोग के प्रमुख स्तंभ

Pillars of Support

**SRDJA POPOVIC, SLOBODAN DJINOVIC, ANDREJ MILIVOJEVIC,
HARDY MERRIMAN, AND IVAN MAROVIC**

FROM THE BOOK: CANVAS CORE CURRICULUM: A GUIDE TO EFFECTIVE NONVIOLENT STRUGGLE
CENTRE FOR APPLIED NONVIOLENT ACTIONS AND STRATEGIES, 2007
Translation: Ramesh Sharma, March 2018

सहयोग के प्रमुख स्तंभ

कोई भी शासक स्वयं टैक्स एकत्रीकरण, दमनात्मक कानून अथवा प्रावधानों का क्रियान्वयन, समय पर पाबंदी के साथ परिवहन व्यवस्था का संचालन, बजट का निर्माण, यातायात का प्रबंधन, मुद्रा की छपाई, सड़कों का सुधार, पुलिस और सैन्यबलों का प्रशिक्षण, डाक व्यवस्था और दुग्ध प्रबंधन आदि जैसे अनेक कार्यों का संपादन नहीं कर सकता। वरन इन सभी कार्यों को सुचारु रूप से करने के लिये शासकों को विभिन्न संस्थानों और संबंधित सहयोगियों की आवश्यकता होती ही है। यदि संबंधित लोग इन कार्यों के निष्पादन में शासन को सहयोग न करें तो शासन के लिये राज्य-व्यवस्था बनाये रखना कठिन अथवा असंभव हो जायेगा। हम राज्य शासन के इन सहयोगी तंत्र को समझते हुये, समाज के राजनैतिक शक्ति का भी आंकलन कर सकते हैं। फिर यह समझना भी आसान हो जायेगा कि राज्य व्यवस्था आखिर शक्ति का संचालन कैसे करता है। हम पाते हैं कि वास्तव में राज्यतंत्र की शक्ति के केंद्र में सहयोगी तंत्र के रूप में आम आदमी ही होते हैं। एक समुच्चय के रूप में वो प्रभावशाली तभी होते हैं जब उनकी शक्ति एक संस्थागत रूप में कार्य करती है, जैसे प्रशासनिक कर्मचारी, पुलिस, श्रमिक और व्यापारी वर्ग आदि। इन्हीं में से कुछ लोग आप के प्रमुख सहयोगी अथवा प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं।

हम इन सहयोगी संस्थानों को सहयोग के प्रमुख स्तंभ कहते हैं क्योंकि यही समाज की शक्ति के केन्द्र में भी हैं। किसी भी अहिंसात्मक आंदोलन के प्रारंभिक अवस्था में संभव है कि यही संगठन आप के प्रतिद्वंद्वी हों। किन्तु जब यही संगठन, आंदोलन के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी अर्थात् राज्य का सहयोग करना बंद कर दें तो राज्य व्यवस्था निश्चित ही असहाय हो जायेगी। और जब यही संगठन, आंदोलन का समर्थन शुरू कर दें तो राज्य का नियंत्रण ही समाप्त होने लगेगा।

टीप : यदि लोग अपना सहयोग स्थगित कर दें तो राज्य, शासन कर ही नहीं सकेगा।

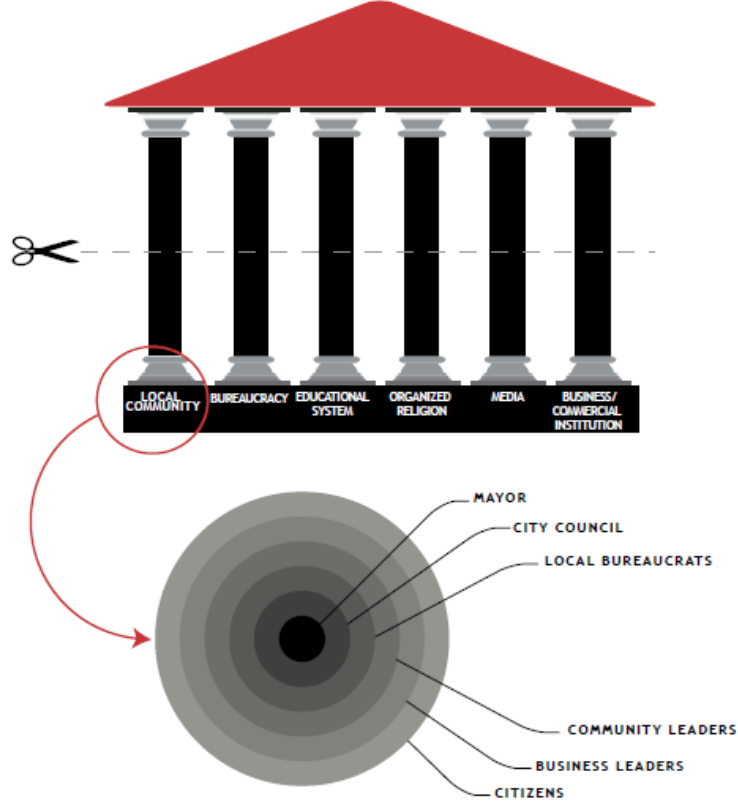
SPO 1 : सहयोग के स्तंभ की परिभाषा

हम अपनी सहूलियत के लिये सहयोग के स्तंभ को इस तरह परिभाषित कर सकते हैं -

"सहयोग के स्तंभ, समाज के वो हिस्से और संस्थान हैं जो मौजूदा राज्य को आवश्यक शक्ति और व्यवस्थागत विस्तार देती हैं"

- अहिंसात्मक संघर्षों का संचालन, जीन शार्प

हरेक समाज और राज्य व्यवस्था के भीतर इन सहयोग के स्तंभ को चिन्हित किया जा सकता है। इनके अंतर्गत- पुलिस, सैन्यबल, न्यायपालिका, प्रशासनिक कर्मचारी, चुनाव आयोग, शैक्षणिक निकाय, संगठित धार्मिक प्रतिष्ठान, राज्य संचालित मीडिया, व्यापारिक प्रतिष्ठान तथा अन्य संगठन हो सकते हैं।



Graphic 1 Terms for Translation (house with pillars)

Local Community	स्थानीय समुदाय
Bureaucracy	प्रशासनिक कर्मचारी
Educational System	शैक्षणिक निकाय
Organized Religion	संगठित धार्मिक प्रतिष्ठान
Media	मीडिया
Business/Commercial Institutions	व्यापारिक प्रतिष्ठान

Graphic 2 Terms for Translation (concentric circles)

Mayor	मेयर
City Council	नगरपालिका
Local Bureaucrats	स्थानीय प्रशासन
Community Leaders	सामुदायिक नेतृत्व
Business Leaders	व्यापारिक नेतृत्व
Citizens	आम नागरिक

हमें सहयोग के स्तंभों और उनके सामाजिक दायित्वों की समझ होनी चाहिये

यह जानना ज़रूरी है कि हम अर्थव्यवस्था अथवा धर्म को सहयोग के स्तंभ के रूप में चिन्हित नहीं कर सकते। वास्तव में उन्हीं संस्थानों को सहयोग के स्तंभ के रूप में चिन्हित किया जा सकता है जो एक विशेष सामाजिक दायित्व का निष्पादन करते हैं। यदि आप समाज को प्रभावित करना चाहते हैं तो सहयोग के स्तंभ के रूप में उन संस्थानों तक अपनी पकड़ बनानी होगी जो राज्यव्यवस्था के निकाय के रूप में किसी विशेष सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हैं।

SPO 2: सहयोग के स्तंभ को धक्का देने के बजाय अपने पाले में लाने का प्रयास करना चाहिये

अहिंसात्मक आंदोलन के कार्यकर्त्ताओं के लिये महत्वपूर्ण है कि सहयोग के स्तंभ में जवाबदेह लोगों तक पहुँचकर उनके व्यवहार में आंदोलन के प्रति सहानुभूति पैदा करे। और ऐसा करते हुये :

- आंदोलन के प्रमुख प्रतिद्वंदी के प्रति स्वामीभक्ति को समाप्त करे
- अपने समर्थन में लेते हुये उन्हें इतना प्रेरित करें कि वे अपने ज्ञान, समय, कार्यदक्षता और संसाधनों को प्रमुख प्रतिद्वंदी के हित में लगाने से इनकार कर दें

टीप : आपके अहिंसात्मक आंदोलन का लक्ष्य सहयोग के स्तंभ को धक्का देने के बजाये अपने पाले में लाने का प्रयास होना चाहिये

जब अहिंसात्मक आंदोलन ऐसे ही किसी सहयोगी स्तंभ को पूर्णतः प्रभावित करने में सफल होता है तब संबंधित निकाय निश्चित ही प्रमुख प्रतिद्वंदी से न केवल अपना सहयोग स्थगित करता है बल्कि संबंधित आदेशों के अनुपालन से इनकार कर देता है अथवा आदेशों को लगभग अनदेखी करते हुये उनके अनुपालन में जानबूझकर विलम्ब और त्रुटि पैदा करता है। बाद की परिस्थितियों में इन सहयोगी स्तंभों के जवाबदेह लोग स्वयं ही आंदोलन के हिस्सेदार होने लगते हैं।

सहयोग के इन स्तंभों के भीतर व्यवहार को अपने पक्ष में लाने के लिये गहरी समझ के साथ-साथ यह जानना ज़रूरी है कि इन सहयोग के स्तंभों को धक्का देने के बजाये अपने पाले में लाने का संज़ीदा प्रयास करना चाहिये।

उदाहरण के लिये - अहिंसात्मक आंदोलनों के दौरान पुलिस और सैन्यबलों से संवाद करते हुये उन्हें अपने पक्ष में लाने के लिये भावनात्मक और यथार्थपरक अपील की अहम् भूमिका है। इन अपीलों का निश्चित ही गहरा और सकारात्मक असर होता है। इसके विपरीत जिन आंदोलनों में पुलिस अथवा सैन्यबलों के विरुद्ध हिंसा का इस्तेमाल होता है वहां निश्चित ही ये राज्यसत्ता के और अधिक अनुगामी हो जाते हैं जिसके बाद आंदोलन से जुड़ाव और संवेदना की सम्भावनायें ही समाप्त होने लगती हैं। कुछ

परिस्थितियों में, राज्यव्यवस्था सोदेश्य आंदोलनकारियों को हिंसात्मक प्रतिक्रिया के लिये उकसाती है ताकि राज्य के प्रति व्यवस्था के पहरुओं की स्वामीभक्ति बढ़ जाये और वे राज्य के आदेशों का अनुपालन करें।

SPO 3 : सहयोगी स्तंभों में हरेक के दायित्वों के प्रति गहरी समझ विकसित करते हुये उनके सामाजिक दायित्वों के महत्त्व को जानना चाहिये

इस तरह हम सहयोगी स्तम्भों को निश्चित ही अपने पक्ष में प्रेरित कर सकते हैं।